डॉ. अर्जुन चव्हाण

एम.ए.बी.एड्.पीएच्.डी.

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शिवाजी विश्वविद्यालय,

कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. अमर श्रीपती जाधव द्वारा लिखित **" स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन " ('कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी' के विशेष संदर्भ में)** लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

तिथि : 30 DEC 2002

डॉ. के. पी. शहा
एम.ए. पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण
महाविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. अमर श्रीपती जाधव ने मेरे निर्देशन में **" स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन " (' कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी' के विशेष संदर्भ में)** लघु शोध - प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व - योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध - छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। मैं श्री. अमर श्रीपती जाधव के प्रस्तुत शोध कार्य से पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही इसे परिक्षणार्थ अग्रेषित करने की अनुमति प्रदान करता हूँ ।

स्थान : कोल्हापुर।

शोध - निर्देशक

तिथि : 30 DEC 2002

(डॉ. के. पी. शहा)

प्रख्यापन

" स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन " (' कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी' के विशेष संदर्भ में) लघु शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय, या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

शोध - छात्र

तिथि : 30 DEC 2002

(श्री. अमर श्रीपती जाधव)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

एम.ए भाग दो में पढ़ते समय सुप्रसिध्द नाटककार स्वदेश दीपक जी के 'कोर्टमार्शल' नाटक नें मुझे अत्याधिक प्रभावित किया । उनका नाटक कोर्टमार्शल हमारी समकालिन व्यवस्था के हर अंग में छिपे उन चेहरों का सीधा पर्दाफाश करता हैं, जो कानून, नियम, अनुशासन तथा व्यवस्था की ओट में निम्नवर्ग का तथा नारी का निर्मम शोषण करते रहते हैं। नाटक "कोर्टमार्शल" की गहराई ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इस प्रभाव के परिणाम स्वरूप मैंने उनके काल कोठरी, जलता हुआ रथ, नाटक बाल भगवान तथा सबसे उदास कविता आदि नाटकों को बड़ी लगन से पढ़ा और मैंने यह तय किया कि दीपक जी के "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों पर ही एम् फिल करूँगा। मैंने अपने श्रदधेय गुरूवर्य डॉ. के. पी. शहा जी से विचार – विमर्श करने के उपरांत स्वदेश दीपक के नाटकों पर अपना शोधकार्य आंरभ किया।

स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन आरंभ करते समय मेरे मन में जो प्रश्न उपस्थित हुए वे इस प्रकार हैं।

1 स्वदेश दीपक का जीवन किस तरह बीता हैं ?

2 उनका व्यक्तिव और कृतित्व कैसा हैं ?

3 स्वदेश दीपक के नाटकों के मूल विषय कौनसे हैं ?

4 उनके नाटकों का उद्देश्य क्या हैं ?

5 उनके नाटकों में प्रमुख समस्याएँ कौनसी हैं ?

6 उनके नाटकों में निम्नवर्ग जीवन का चित्रण कैसे हैं ?

7 रंगमंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से उनके नाटक कैसे हैं ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध–प्रबंध में किया हैं। अध्ययन के उपरांत जो निष्कर्ष मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध के उपसंहार में दे दिया हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध–प्रंबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया हैं।

प्रथम अध्याय : "स्वदेश दीपक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

इस अध्याय में दीपक जी का जीवन परिचय संक्षेप में दिया हैं। इसमें उनका जन्म, माता, पिता की जानकारी, बचपन, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, बच्चे आदि का विवेचन किया हैं।

साथ ही उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर नजर डाली हैं। उनके रचनाओं का प्रथम संस्करण तथा प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान का ब्यौरा दिया गया हैं। साथ ही उनके सभी नाटकों के मंचन की विस्तृत जानकारी दी हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिया हैं।

द्‌वितीय अध्याय : " स्वदेश दीपक के नाटकों का सामान्य परिचय "

इस अध्याय के अंतर्गत दीपक जी के सभी नाटकों का सामान्य परिचय प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया हैं । नाटकों का परिचय करते समय उनके हर नाटक का संक्षिप्त परिचय देकर नाटकों की कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल–वातावरण, शैली और उद्‌देश्य आदि का विवेचन किया हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किया हैं।

तृतीय अध्याय : " " कोर्टमार्शल " और " काल कोठरी " नाटकों का शिल्पगत अध्ययन "

प्रस्तुत अध्याय में ' कोर्टमार्शल ' और ' काल कोठरी ' नाटकों का नाटक के प्रमुख तत्वों के आधार पर विवेचन किया हैं। कथावस्तु पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद(कथोपकथन), देशकाल–वाताधरण, भाषाशैली, उद्‌देश्य, शीर्षक की सार्थकता आदि तत्वों के आधार पर विवेच्य नाटकों का विवेचन किया हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं।

चतुर्थ अध्याय : " "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों में चित्रित समस्याएँ "

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटको में चित्रित अनेक समस्याओं का विवेचन किया हैं। इसमें जातियता की समस्या, शोषण, भ्रष्टाचार, न्याय व्यवस्था, शोषणमूलक अफसरी सभ्यता, अहंकार, काम, आर्थिक, पारिवारिक, साहित्यिक, कलाकार की उपेक्षा, प्रेम का खोखला आदर्श तथा व्यवस्था आदि समस्याओं का विवेचन किया हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं।

पंचम अध्याय : " " कोर्टमार्शल " और " काल कोठरी " नाटकों की रंगमंचीयता "

प्रस्तुत अध्याय में रंगमंच के स्वरूप के साथ हिंदी रंगमंच की विकास परंपरा को स्पष्ट करते हुए "कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों का मंचीयता की दृष्टि से समग्र विवेचन किया हैं। इसमें विवेच्य नाटकों को निर्देशन एवं व्यवस्थापन, अभिनय, रूप–सज्जा, दृश्य–सज्जा, प्रकाश योजना, ध्वनी एवं संगीत योजना, रंगमंचीय प्रस्तुति एवं दर्शकीय संवेदना आदि रंगमंचीय तत्वों के आधार पर परखा गया हैं । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये है ।

उपसंहार :–

सभी अध्यायों के विवेचन के उपरांत मैंने उपसंहार में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं। जो प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध के अध्ययन का सार हैं। अंत में परिशिष्ट, आधार ग्रंथ सूची और संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई हैं।

प्रस्तुत शोध–कार्य की मौलिकता :–

1) संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा अध्ययन पर आधारीत हैं।

2) प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में स्वदेश दीपक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय पहली बार किया गया हैं।

3) प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में दीपक जी के सभी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया हैं।

4) दीपक जी के 'कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी' नाटको में चित्रित प्रमुख पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट किया हैं।

5) निम्नवर्ग तथा कलाकारों की समस्याओं के साथ–साथ नारी समस्या का भी चित्रण प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में किया गया हैं।

ऋणनिर्देश

इस शोधकार्य को संपन्न करने में मेरी सहाय्यता तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.के.षी. शहा जी के निर्देशन में पूर्ण किया हैं। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आपने समय–समय पर अमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया, इसलिए मैं आपका कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी एवं आदरणीय गुरूवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा हैं, इसलिए मैं उनका हदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री. श्रीपती जाधव, माताजी श्रीमती चंद्रभागा जाधव, चाचा श्री बाबुराव जाधव तथा बुआ श्रीमती सखूबाई पाटील, इन सबके आशीर्वाद का फल हैं कि मैं अपने कार्य पूर्ति में सफल हुआ हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं की बदौलत हूँ । अतः उनका आभार मानकर मैं उनके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहता । मेरा यह संकल्प उनके चरणों में सादर अर्पित हैं।

विशेष रूप से मैं ऋणी हूँ श्री सदगरू दिनानंद महाराज कांडगावकर जी का जिनके आशीर्वाद के बीना यह कार्य असंभव था। साथ ही मेरी बहन श्रीमती सुवर्णा माने, श्रीमती संगीता कदम और अनिता, जीजाजी श्री विलास माने (वडणगे) और श्री शहाजी कदम (वालवा) जिनके प्रोत्साहन और प्रेरणा के कारण आज मैंने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया हैं, उनका मैं हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

मेरे सहपाठी जयश्री चौगुले, श्री निवृत्ती रावळ, मिलिंद पाटील, संभाजी सुर्वे, स्वप्नील किनरे, प्रविण कांबळे, मल्लिकार्जुन चोखंडे, आसिफ कुरणे आदि से मुझे अनमोल सहाकार्य मिला। उन्होनें मुझे समय–समय पर प्रोत्साहित किया हैं। साथ ही शिवाजी विश्वाविद्यालय में स्थित ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध–प्रबंध का सुचारू रूप से टंकलेखन करनेवाले सचिन कोळेकर, कोल्हापुर का मैं आभारी हूँ।

अंत मैं उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्ति जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है । उन सबके प्रति मैं हदय से आभार प्रकट करता हूँ और विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख इस लघु शोध–प्रबंध को परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध–छात्र

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 30 DEC 2002

(श्री. अमर श्रीपती जाधव)